Toppersnotes®
Unleash the topper in you

Bihar – LET

लाइब्रेरियन

पुस्तकालय पात्रता परीक्षा

भाग - 1

सामान्य अध्ययन, सामान्य गणित एवं तर्कशक्ति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	सिन्धु घाटी सभ्यता	1
2	वैदिक काल	4
3	बौद्ध और जैन धर्म	8
4	दिल्ली सल्तनत काल	11
5	मुगल काल	15
6	1857 का विद्रोह	18
7	राष्ट्रीय आन्दोलन	19
8	धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन	21
9	संविधान सभा	23
10	प्रस्तावना	27
11	संविधान की विशेषताएँ	30
12	संवैधानिक संशोधन और आधारभूत संरचना का सिद्धांत	34
13	मूल अधिकार	42
14	मौलिक कर्तव्य	52
15	राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत	54
16	अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत	56
17	मुद्रास्फीति	61
18	मुद्रा, मुद्रा आपूर्ति और मौद्रिक नीति	65
19	लघुत्तम समापवर्त्य व महत्तम समापवर्तक	70
20	पंचवर्षीय योजनाएँ	73
21	बजट	75
22	भारत का बजट 2025–26	78
23	आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25	83

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	प्रमुख वित्तीय संस्थाएँ	89
25	संख्या पद्धति	93
26	प्रतिशतता	100
27	औसत	104
28	लाभ – हानि	108
29	अनुपात व समानुपात	113
30	मिश्रण एवं एलीगेशन	117
31	समय और कार्य	119
32	सादृश्यता	122
33	चाल, समय और दूरी	126
34	साधारण ब्याज	130
35	चक्रवृद्धि ब्याज	133
36	क्षेत्रमिति	136
37	अंग्रेजी वर्णमाला परीक्षण	151
38	श्रृंखला	156
39	कूट भाषा परीक्षण	160
40	वर्गीकरण	164
41	दिशा और दूरी	167
42	रक्त संबंध	172
43	क्रम और रैंकिंग	179
44	घडी	183
45	कैलेंडर	187
46	आकृतियों की गणना	190

1 CHAPTER सिंधु घाटी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार:

- सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे कांस्य युगीन या हड़प्पा सभ्यता के रूप में भी जाना जाता है, एक शहरी सभ्यता थी जो सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के आसपास विकसित हुई थी।
- यह सभ्यता लगभग 2600 ईसा पूर्व और 1700 ईसा पूर्व के बीच फली-फूली।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के निदेशक **जॉन मार्शल** द्वारा इसे "**सिंधु घाटी सभ्यता**" नाम दिया गया था।
- प्रथम उत्खनित स्थल हड़प्पा था, जिसे **दया राम साहनी** ने वर्ष 1921 में खोजा था, इसी कारण इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है।

> **नोट: अलेक्जेंडर कनिंघम** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के **प्रथम** अध्यक्ष थे, तथा उन्हें **पुरातत्व के जनक** के रूप में भी जाना जाता है।

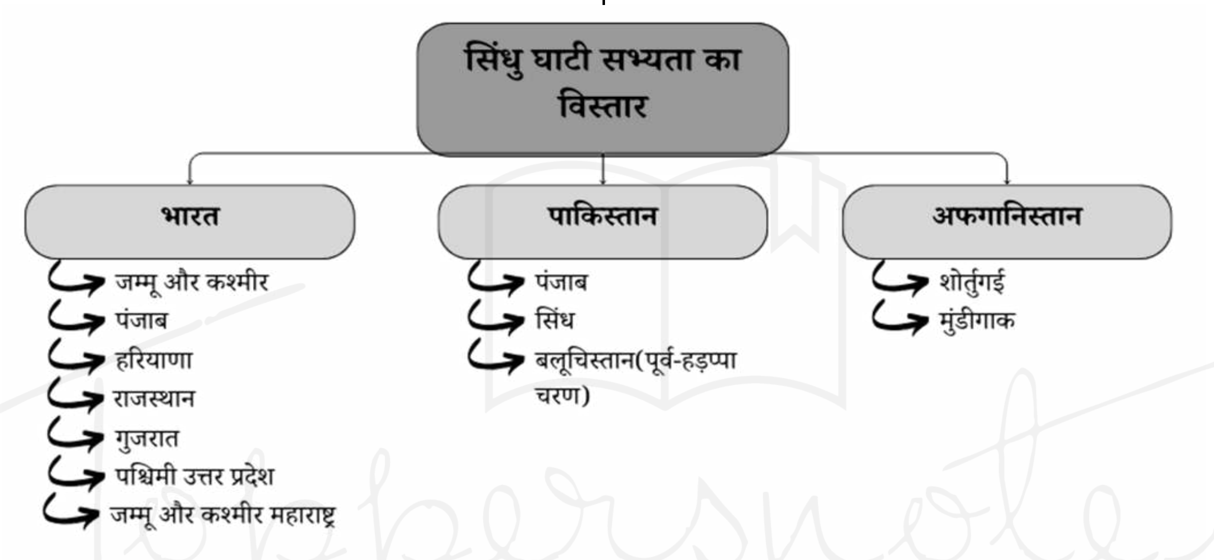

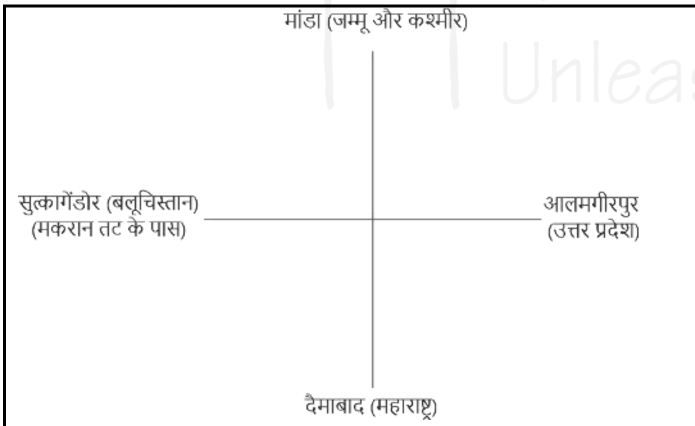

- सबसे उत्तरी स्थल - मांडा (जम्मू और कश्मीर)
- सबसे दक्षिणी स्थल - दैमाबाद (महाराष्ट्र),
- सबसे पूर्वी स्थल - आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) और
- सबसे पश्चिमी स्थल - सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) क्रमशः मांडा (जम्मू और कश्मीर), दैमाबाद (महाराष्ट्र), आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) और सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) हैं।

नोट:

- **अफगानिस्तान** में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे – **शोर्तगोई** एवं **मुंडीगाक**।
- शोर्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के लक्षण मिले हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता से **12 गुना बड़ी** थी जबकि **मिस्र** की सभ्यता से **20 गुना बड़ी** थी।
- **भारत विभाजन** के पूर्व खोजे गए स्थल **पाकिस्तान** में चले गए।
- भारत में केवल दो स्थल रहे –
  - **धोलावीरा (गुजरात)**
  - **रोपड़ (पंजाब)**
- भारत का सबसे बड़ा स्थल **राखीगढ़ी (हरियाणा)** है तथा दूसरा बड़ा स्थल **धोलावीरा (गुजरात)** है।
- **पिग्गट** ने **हड़प्पा** एवं **मोहनजोदड़ो** को सिंधु सभ्यता की **जुड़वाँ राजधानी** बताया है।

- बड़े नगर (पाकिस्तान में):
  - **गनेरीवाला**
  - **हड़प्पा**
  - **मोहनजोदड़ो**

सिन्धु घाटी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषताए

सिंधु घाटी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषताएँ (संक्षिप्त रूप में):

नगर नियोजन:

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग। पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था।
- पश्चिमी भाग में प्राशासनिक लोग रहते हैं। तथा पूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों के मकान हैं।
- सिंधु घाटी के समकालीन सभ्यताओं में इस विशेषता का अभाव था ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे।
- घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की तरफ़ न खुलकर पीछे की ओर खुलते हैं। केवल लोथल में मुख्य सड़क की तरफ़ घरों के दरवाजे खुलते हैं।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है जबकि चन्हुदड़ो में कोई परकोटे नहीं है |
- धोलावीरा तीन भागों में विभक्त हैं – पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यम।
- लोथल एवं सुरकोटड़ा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनों ही परकोटे युक्त दीवारों से घिरे हुए हैं।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात् शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरो को बसाया था तथा सभी मार्ग एक-दूसरे को समकोण पर काटते हैं।
- सबसे चौड़ी सड़के 10 मीटर (मोहनजोदड़ो) की मिलती है। अनुमानतः राजमार्ग रहा होगा।
- घरों में उत्कृष्ठ नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बड़ी नालियों को ढक कर रखते थे |
- भवन के अन्दर सामान्यत: 3 या 4 कक्ष, स्नानगृह, रसोईघर एवं आंगन के रूप में होता था।
- कच्ची एवं पक्की ईंटें का प्रयोग करते थे
- **ईंट का आकार – 1 : 2 : 4**
- जल निकासी हेतु पक्की ईटों की नालियों होती थी। विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिले है।

<u>सिन्धु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल</u>

साइट/स्थल/वर्ष	स्थान/नदी/खोजकर्ता	विशेषताएँ
1. हड़प्पा (1921)	• स्थान: पंजाब,पाकिस्तान • नदी: रावी • खोजकर्ता: दयाराम साहिनी	प्रत्येक पंक्ति में 6 अन्नागार , लिंगम, योनि और मातृ देवी की (टेराकोटा मूर्तियाँ), R - 37 नामक कब्रिस्तान मिला ,एक शव को ताबूत में दफनाया गया है इसे **विदेशी की कब्र** कहते है |, 6 -6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला , एक स्त्री के गर्भ से निकलते हुए पौधे की मृणमूर्ति मिली है जिसे संभवत: **उर्वरता की देवी** कहते होंगे	
2. चन्हुदड़ो	• स्थान: सिंध, पाकिस्तान • नदी: सिंधु • खोजकर्ता:गोपाल मजूमदार	एकमात्र नगर जहां गढ़ किला नहीं है, यहाँ से मनका(मोती) बनाने का के कारखाने के साक्ष्य मिले हैं , मुहर बनाने का कार्य , कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा कने के पद चिन्ह मिला , लिपस्टिक इत्यादि के साक्ष्य प्राप्त होते हैं ।
3. मोहनजोदड़ो	• स्थान: सिंध, पाकिस्तान • नदी: सिंधु • खोजकर्ता:राखलदास बनर्जी	**'मृतकों का टीला'** के नाम से जाना जाता है, गढ़किला, महान विशाल स्नानागार (आकार 11.88 x 7.01 x 2.43 मीटर) और **विशाल महान अन्नागार** (आकार ल.x चौ. 45.71x 15.23 मीटर , सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी ईमारत)। मातृ देवी की मिट्टी की मूर्ति, कांस्य की नर्तकी की मूर्ति मिली है, पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है , मेसोपोटामिया की मुहर मिली , बाढ़ के पतन के साक्ष्य मिले	
4. लोथल	• स्थान: गुजरात • नदी: भोगवा • खोजकर्ता: एस.आर. राव	प्राचीन बंदरगाह, गोदीवाड़ा (जहाज़ बनाने का स्थान) गोदी, टेराकोटा जहाज, अग्नि वेदी, संयुक्त अंत्येष्टि, मनका कारखाना, चावल के साक्ष्य , चक्की के दो पाट, छोटे दिशा सूचक यंत्र , घोड़े की मृणमूर्ति	
5. कालीबंगा	• स्थान: राजस्थान • नदी: घग्गर • खोजकर्ता: अमलानंद घोष	7 अग्नि वेदिकाएँ व हवन कुंड के साक्ष्य मिले, युग्मित शवाधन, शल्यचिकित्सा की जानकारी, काली चूड़ियाँ, हल से जूते हुए खेत के साक्ष्य, लाल रंग के मिट्टी के बर्तन , ऊँट की हड्डियाँ, भूकंप के साक्ष्य

		• नोट: यहाँ उत्खनन के पांच स्तर मिले जिसमे प्रथम दो स्तर प्राक हड़प्पा कालीन था अन्य स्तर हड़प्पा के समकालीन थे। • इतिहासकार दशरथ शर्मा ने कालीबंगा को हड़प्पा की तीसरी राजधानी कहा |
6. सुरकोताडा	• स्थान: गुजरात • खोजकर्ता: जगपति जोशी	घोड़े की हड्डियों के पहले प्रथम वास्तविक अवशेष
7. सुत्कागेंडोर	• स्थान: पाकिस्तान	तटीय शहर, सबसे पश्चिमी सबसे दूर स्थल
8. धोलावीरा	• स्थान: गुजरात • खोजकर्ता: जगपति जोशी • खुदाई शुरू : आर.एस.बिष्ट	सबसे नवीन नगर जिसका उत्खनन किया गया | कच्छ क्षेत्र में स्थित, विशाल जलाशय मिले है। 2021 में इसे विश्व धरोहर स्थल सूची में शामिल गया (भारत में 40वाँ)
9. राखीगढ़ी	• स्थान: हरियाणा • नदी: घग्गर • खोजकर्ता: अमरेंद्र नाथ	भारत का सबसे बड़ा स्थल, टेराकोटा के से निर्मित पहिये और खिलौने
10. भिराणा	• हरियाणा	सबसे पुराना सिन्धु घाटी सभ्यता स्थल
11. बनावली	• स्थान: हरियाणा • नदी: घग्गर • खोजकर्ता: आर.एस.बिष्ट	ग्रिड पैटर्न का अभाव, सूखी सरस्वती नदी
12. रोपड़	• स्थान: पंजाब, भारत • नदी: सतलुज	मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य, अंडाकार अंत्येष्टि गड्ढे, यह स्वतंत्र भारत का पहला हड़प्पा स्थल है
13. आलमगीरपुर	• स्थान: मेरठ, उत्तर प्रदेश • नदी: यमुना	सबसे पूर्वी स्थल
14. मेहरगढ़	• स्थान: पाकिस्तान	मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार
15. कोट दिजी	• स्थान: पाकिस्तान	बैल और मातृ देवी की मूर्तियाँ प्राप्त हुई ।
16. बालू	• स्थान: हरियाणा	**विभिन्न पौधों के सर्वप्रथम सबसे पहले पार्थिव अवशेष**, सबसे पहले लहसुन का के साक्ष्य)।
17. दैमाबाद	• स्थान: महाराष्ट्र	सबसे दक्षिणी स्थल, कांस्य रथ
18. केरल-नो-धोरो	• स्थान: गुजरात	नमक उत्पादन केंद्र
19. मांडा	• स्थान: जम्मू और कश्मीर	सबसे उत्तरी स्थल

Toppers Notes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER वैदिक काल

वैदिक काल :

पूर्व वैदिक काल - 1500 - 1000 ई.पू.

उत्तर वैदिक काल - 1000- 600 ई.पू.

पूर्व वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)

- भारत में आर्यों के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत वैदिक साहित्य है, जो संस्कृत में लिखा गया है।
- ऋग्वेद में आर्यों और उनके प्रमुख भौगोलिक क्षेत्र सप्त-सैंधव का उल्लेख मिलता है।
- सप्त-सिंधव क्षेत्र सात नदियों का क्षेत्र था, जिनके नाम निम्नलिखित हैं:
  1. सिंधु (Indus)
  2. वितस्ता (झेलम - Jhelum)
  3. अस्किनी (चिनाब - Chenab)
  4. परुष्णी (रवि - Ravi)
  5. विपाशा (ब्यास - Beas)
  6. शतुद्रि (सतलज - Sutlej)
  7. सरस्वती (नदितमा / हर्कवती - Saraswati)
- ऋग्वेद के नंदी सूक्त में पूर्व में गंगा नदी और पश्चिम में कुंभा (काबुल नदी) का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेदिक ऋचाएं उस समय के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रतिबिंबित करती हैं।
- इसमें आर्यों और दास या दस्यु (गैर-आर्य) के बीच संघर्ष का वर्णन है।
- साथ ही, यह भरत कुल के दिवोदास द्वारा एक प्रमुख दस्यु सरदार शंबर की पराजय का उल्लेख करता है।

ऋग्वेद

- यह चार वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद) में से एक है।
- यह इंडो-यूरोपीय भाषा का सबसे प्राचीन उदाहरण है।
- इसमें अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण और अन्य देवताओं को अर्पित प्रार्थनाओं का संग्रह है।
- इसमें 1028 मंत्र हैं, जो 10 मंडलों (पुस्तकों) में विभाजित हैं:
  - द्वितीय से सप्तम मंडल सबसे पहले रचित हुए थे।
  - प्रथम और दशम मंडल सबसे अंत में रचित हुए।

प्रारंभिक वैदिक काल का भौगोलिक विस्तार

- आर्य भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहते थे।

जेंड अवेस्ता

- पारसी धर्म का प्रमुख ग्रंथ, जो भारत के उत्तर और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों का संदर्भ देता है।
- यह ग्रंथ इंडो-ईरानी भाषाएं बोलने वाले लोगों की भूमि और उनके देवताओं का उल्लेख करता है।
- इसमें वैदिक ग्रंथों से भाषाई समानता वाले शब्द मिलते हैं, जो आर्यों के प्रारंभिक निवास स्थान भारतीय उपमहाद्वीप से बाहर होने का अप्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

पूर्व वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था

- समाज का संगठन: कुल (परिवार), विस (कुल), ग्राम (समुदाय) पर आधारित था।
- **चातुर्वर्ण्य व्यवस्था**: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, कर्म के आधार पर वर्णों के बीच गतिशीलता थी।
- महिलाएं आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास में पुरुषों के समान अधिकारों से संपन्न थीं।
- **प्रमुख महिला विद्वान**: अपाला, विश्ववारा, घोषा, लोपामुद्रा।
- प्रेम विवाह (गंधर्व विवाह भी कहते है), विधवा पुनर्विवाह (नियोग प्रथा)।
- समाज पितृसत्तात्मक था, दास प्रथा मौजूद थी (दास: पराजित आर्य, दस्यु: अनार्य)।

पूर्व वैदिक काल की अर्थव्यवस्था

- मुख्य व्यवसाय: पशुपालन (गायें)।
  - **गोपा**: गाय,
  - **गोपजन्य**: गाय का स्वामी,
  - **दूत्री**: गाय दुहने वाला।
  - **गविष्ठी**: गायों की खोज।
  - **गोधूली** - संध्या
  - **गोधूम** - गेंहू
- तांबे और कांसे के उपकरण भी अर्थव्यवस्था का हिस्सा थे तथा **"निष्क"** सोने के सिक्के प्रचलित थे।
- कर प्रणाली प्रचलित नहीं थी, लेकिन 'बलि' कर स्वेच्छा से कबीले के मुखिया को अर्पित किया जाता था।

पूर्व वैदिक काल की राजनीतिक व्यवस्था

- राजनीति कबीलों (जन) पर आधारित थी और इनके कबीलों को जन कहा जाता था तथा आर्य कबीलों का मुखिया "राजन" होता था।
- **सभा**, **समिति** और **विदथ** जैसे जनप्रतिनिधि संस्थाएं राजन की सहायता करती थीं।

1. सभा	कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों (जन के वरिष्ठ सदस्य) का समुदाय, जिसमें महिलाएं भी शामिल थीं।
2. समिति	यह राजन का चुनाव करने वाले सामान्य लोगों का समूह था। इसमें केवल पुरुष ही हिस्सा लेते थे।
3. विदथ	इसका निर्माण धार्मिक उद्देश्य और धर्म से संबंधित निर्णय लेने के लिए किया जाता था । इसमें पुरुष और महिला दोनों भाग लेते थे।

अधिकारियों का पदानुक्रम

- **पुरोहित**: राजा के मुख्य सलाहकार
- **सेनानी**: सेना प्रमुख
- **ग्रामणी**: गाँव का मुखिया

पूर्व वैदिक काल का धर्म

- प्रकृति उपासक: पृथ्वी, इंद्र, अग्नि, वायु, अदिति, वरुण, सावित्री (गायत्री मंत्र समर्पित) की पूजा होती थी।

मृद्भांड

- गेरू रंग के मिट्टी के बर्तन।

वेद

- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया।
- वेदों को नित्य, प्रामाणिक और अपौरुषेय माना जाता है।
- वैदिक मंत्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को **द्रष्टा** कहा जाता है।

वेद 4 प्रकार के होते हैं:

1. **ऋग्वेद**
   - ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त और 10580 (10600) मंत्र होते हैं।
   - पहला और दसवाँ मण्डल बाद में जोड़े गए हैं। दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल / परिवार मण्डल कहा जाता है।
   - तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है। गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की। यह मंत्र सवितृ (सूर्य) को समर्पित है।
   - सर्वाधिक मूर्तियाँ मातृ देवी की मिली हैं।
   - लिंग और योनि की पूजा की जाती थी।
   - योग से परिचित थे।
   - वे प्राकृतिक बहुदेववाद में विश्वास करते थे और मृत्यु के बाद भी जीवन में विश्वास रखते थे।
   - सिंधु वासी घोड़े, गाय, शेर और ऊँट से परिचित नहीं थे और लोहे से भी परिचित नहीं थे।
   - **उपनिषद**
     - ऐतरेय
     - कौषीतकी

2. **यजुर्वेद**
   - यजुर्वेद दो भागों में बाँटा गया है:
     - शुक्ल यजुर्वेद
     - कृष्ण यजुर्वेद
   - यह गद्य और पद्य दोनों रूपों में है।
   - इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है।
   - मंत्र पढ़ने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है।
   - यज्ञ अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है।
   - उपवेद है - धनुर्वेद।
   - **उपनिषद**
     - बृहदारण्यक उपनिषद
     - कठोपनिषद

3. **सामवेद**
   - यह संगीत का प्राचीनतम शास्त्र है।
   - इसमें वैदिक मंत्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते हैं।
   - यह भगवान कृष्ण का प्रिय वेद है।
   - मंत्रों का उच्चारण करने वाले को उद्गाता कहा जाता है।
   - उपवेद है - गंधर्ववेद।
   - **उपनिषद**
     - छांदोग्य उपनिषद
     - केन उपनिषद

4. **अथर्ववेद**
   - अथर्ववेद का रचनाकार अथर्व ऋषि और आंगीरस ऋषि हैं।
   - इसे अथर्वांगीरस वेद भी कहा जाता है।
   - इसमें काले जादू-टोने, टोटके और चिकित्सा का उल्लेख मिलता है।
   - औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र-मंत्र आदि का विवरण है।
   - मंत्रों का उच्चारण करने वाले को "ब्रह्म" कहा जाता है।
   - उपवेद है - शिल्पवेद।
   - **उपनिषद**
     - **माण्डूक्य उपनिषद:** इसमें "सत्यमेव जयते" का उल्लेख किया गया है।
     - **महा उपनिषद:** इसमें "वसुधैव कुटुंबकम्" का उल्लेख किया गया है।

ऋग्वेद में वर्णित भौगोलिक जानकारी

- हिमवंत पर्वत (हिमालय)
- मुंजवत पर्वत (हिंदूकुश)
- सप्त सैन्धव प्रदेश (सात नदियाँ) - यह वैदिक आर्यों का निवास स्थान था।

वेदों के उपविभाजन

1. **संहिता**
    - ये वेदों के मुख्य अंग होते हैं जिसमें वैदिक मंत्रों और प्रार्थनाओं का संग्रह होता है, जो विभिन्न अनुष्ठानों से सम्बंधित होते हैं।
2. **ब्राह्मण**
    - ये श्रुति साहित्य का हिस्सा (प्रकट ज्ञान) हैं।
    - रचना काल: 900-700 ई.पू.
    - प्रत्येक वेद के साथ एक ब्राह्मण ग्रंथ संलग्न होता है, जो वेदों पर टीकाओं का संग्रह होता है।
        - **ऋग्वेद:** ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकी ब्राह्मण
        - **सामवेद**: तांड्य महाब्राह्मण, षड्विंश ब्राह्मण
        - **यजुर्वेद:** तैत्तिरीय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण
        - **अथर्ववेद**: गोपथ ब्राह्मण
    - इसमें कथाओं, तथ्यों, नैतिक आख्यानों और वैदिक अनुष्ठानों की विस्तृत व्याख्याएँ दी जाती हैं।
    - इसमें अनुष्ठान करने के निर्देश और इन अनुष्ठानों में प्रयुक्त पवित्र शब्दों के प्रतीकात्मक महत्व की व्याख्या भी होती है।
3. **आरण्यक**
    - आरण्यक ग्रंथ को प्रत्येक वेद के साथ शामिल किया गया है, जो वैदिक अनुष्ठानों और यज्ञों के पीछे के दर्शन का वर्णन करते हैं।
    - यह जीवन के चक्र (जन्म और मृत्यु) और आत्मा पर केंद्रित होते हैं।
    - इन्हें वनवासी मुनियों (पवित्र और विद्वान व्यक्ति) द्वारा सिखाया जाता था।
4. **उपनिषद**
    - वैदिक साहित्य के विकास के अन्तिम चरण में उपनिषद-ग्रंथ आते हैं, इसलिए इन्हें "वेदांत" भी कहा जाता है।
    - उपनिषदों में गुरु-शिष्य के संवादों के रूप में गूढ़ बातें कही गई हैं।
    - इनकी विवेचनाओं में आत्मा, ब्रह्म और संसार के रहस्यों का उल्लेख किया गया है।
    - ये मानव जीवन, मोक्ष (मुक्ति) का मार्ग, ब्रह्मांड और मानव जाति की उत्पत्ति, जीवन-मृत्यु चक्र और मानव के भौतिक व आध्यात्मिक खोजों पर विश्लेषण करते हैं।
    - कुल 200 ज्ञात उपनिषद हैं, जिनमें से 108 को "मुक्तिका कानन" कहा गया है।

नोट:

सत्यकाम जाबाला

- एक वैदिक ऋषि, गौतम ऋषि के अनुयायी, जो छांदोग्य उपनिषद के अध्याय IV में वर्णित हैं।
- उन्होंने अविवाहित माँ होने के कलंक को चुनौती दी।

वेदांग

- वेदों के सरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया। यह वैदिक साहित्य का हिस्सा नहीं है।
- इसके छह भाग हैं।
    1. **शिक्षा -** इसे वेदों की नासिका कहा जाता है।
    2. **ज्योतिष -** इसे वेदों की आंख कहा जाता है।
    3. **व्याकरण -** इसे वेदों का मुख कहा जाता है।
    4. **छन्द -** इसे वेदों का पैर कहा जाता है।
    5. **निरुक्त -** इसे वेदों का कान कहा जाता है।
    6. **कल्प -** इसे वेदों का हाथ कहा जाता है।

कल्प के अंतर्गत शुल्व सूत्र ज्यामिति का सबसे प्राचीन ग्रंथ है।

पुराण- संख्या – 18

- ऋषि लोमहर्षि एवं उनके पुत्र उग्रश्रवा ने इसे संकलित किया।
- मत्स्य पुराण: यह सबसे प्राचीन और प्रामाणिक पुराण है। इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख है।
- **विष्णु पुराण**: मौर्य वंश का उल्लेख है।
- **वायु पुराण:** गुप्त वंश का उल्लेख है।\
- **मार्कण्डेय पुराण**: इसमें दुर्गासप्तशती और महामृत्युंजय मंत्र का उल्लेख है।
- देवी महात्म्य: शुंगवंश का उल्लेख है।

स्मृति साहित्य

- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है। इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है।

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई. पू.)

- 1000 ई. पू. में लोहे के प्रयोग से उत्तर वैदिक काल की शुरुआत मानी जाती है।
- इस काल में अन्य 3 वेदों (साम, अथर्व और यजुर्वेद) की रचना की गई।
- उत्तर वैदिक कालीन ग्रंथों में गंगा, यमुना, गंडक और सदानीरा नदियों का उल्लेख है।
- कुरु जनजाति उत्तर वैदिक काल की सबसे महत्वपूर्ण जनजाति थी। इसमें दो कुल शामिल थे - पांडव और कौरव।
    - परीक्षित और जन्मेजय इसके प्रसिद्ध शासक थे

उत्तर वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था

- इस काल में भूमि प्रमुख आर्थिक संपत्ति बन गई, किन्तु करों की कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं थी।
- मुख्य व्यवसाय - कृषि:
    - जौ, चावल और गेहूं की फसलों की खेती होती थी।
- निष्क के अलावा, शतमान और कृष्णल जैसे सोने और चांदी के सिक्के प्रयोग में लाए जाते थे।
- इस काल में बेबीलोन जैसे देशों के साथ व्यापार होता था।
- इस काल में धातुकर्म, चमड़े का कार्य, बढ़ईगीरी और मिट्टी के बर्तन निर्माण में काफी प्रगति हुई।
- लकड़ी का हल (रुरा) का उपयोग किया जाता था।

उत्तर वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था

- इस काल में **राजन** सबसे महत्वपूर्ण पद था।
- राजन की सहायता और सलाह के लिए पुरोहित वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
  - राजन की सर्वोच्चता को निर्धारित करने के लिए इसे विभिन्न अनुष्ठानिक यज्ञों से जोड़ा गया, जैसे:
    - राजसूय यज्ञ (राज्याभिषेक समारोह, जिसमें पुरोहित वर्ग के आशीर्वाद से राजन को सिंहासन प्राप्त होता है)
    - अश्वमेध यज्ञ (राज्य विस्तार से संबंधित)
    - वाजपेय यज्ञ (रथ दौड़)
- राजन की उपाधियाँ: राजविश्वजन, अहिलभुवनपति, एकराट और सम्राट।
- महत्वपूर्ण अधिकारी:
  - **पुरोहित:** मुख्य सलाहकार
  - **सेनानी:** सेना प्रमुख
  - **ग्रामणी:** गाँव का मुखिया
- जनप्रतिनिधि संस्थाओं में परिवर्तन:
  - **सभा:** महिलाओं को इसमें प्रवेश की अनुमति नहीं थी।
  - **समिति:** इसका महत्व कम हो गया।
  - **विदथ:** इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।

उत्तर वैदिक कालीन समाज

- इस काल में वर्ण व्यवस्था कठोर हो गई और गोत्र प्रणाली मजबूत हो गई। अतः विभिन्न वर्णों के मध्य गतिशीलता कम हो गई।
- इस काल में चार आश्रमों की संकल्पना दी गई:
  - ब्रह्मचर्य (अध्यान काल)
  - गृहस्थ (विवाहित जीवन)
  - वानप्रस्थ (घर से आंशिक संन्यास, ज्ञान प्राप्ति के लिए)
  - संन्यास (पूर्ण संन्यास, आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए)
- धर्म:
  - **प्रजापति (सृष्टिकर्ता)** सबसे महत्वपूर्ण देवता थे।
  - अन्य महत्वपूर्ण देवता - विष्णु (संरक्षक) और रुद्र (विनाशक)।
- **मृद्भांड:** धूसर रंग के मिट्टी के बर्तन।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 CHAPTER बौद्ध और जैन धर्म

बौद्ध धर्म

- संस्थापक: गौतम बुद्ध (शाक्य वंश)।
- जन्म: कपिलवस्तु (नेपाल की तलहटी में स्थित) में लुंबिनी के निकट 563 ईसा पूर्व में हुआ था।
- बचपन का नाम: सिद्धार्थ।
- पिता: शुद्धोधन; माता: महामाया देवी।
- सौतेली माता/मौसी: महाप्रजापति गौतमी(लालन-पालन किया)
- पत्नी: यशोधरा; पुत्र: राहुल.
- वे 4 दृश्य जिन्होंने बुद्ध को आर्य सत्य की खोज में सांसारिक सुखों को त्यागने के लिए प्रेरित किया:
    - एक बूढ़ा आदमी
    - एक बीमार आदमी
    - एक शव
    - एक धार्मिक भिक्षुक
- 29 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ ने गृह त्याग कर दिया इस घटना को **महाभिनिष्क्रमण** के रूप में जाना जाता है।
- सिद्धार्थ विभिन्न स्थानों पर भटकते रहे और थोड़े समय के लिए अलार कलाम के शिष्य बने। उन्होंने साधु उद्दक रामपुत्र से भी मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश **वाराणसी** के निकट **सारनाथ के मृगदाय** में दिया था। इस उपदेश को **धर्मचक्र-प्रवर्तन** (धर्मचक्र को घुमाने) कहा जाता है। इस उपदेश में उन्होंने **"चार आर्य सत्य"** और **"अष्टांगिक मार्ग"** का वर्णन किया, जो बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धांत हैं।
- सर्वाधिक उपदेश - श्रावस्ती में |
- **महापरिनिर्वाण**: 80 वर्ष की आयु में, 483 ई. पू. में कुशीनगर में हुआ।
- **प्रतीक**:
    - **जन्म**: कमल/बैल
    - **गृह त्याग**: घोड़ा
    - **आत्मज्ञान**: बोधि वृक्ष
    - **पहला उपदेश**: पहिया
    - **मृत्यु**: स्तूप
    - **भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक** - हाथी

बौद्ध दर्शन

- **बुद्ध के चार आर्य सत्य**:
    1. **दुःख**: जन्म, बुढ़ापा, मृत्यु, और अधूरी इच्छाएँ दुख के कारण हैं।
    2. **दुःख समुदाय**: सुख, शक्ति, और लंबी आयु की प्यास दुख का कारण है।
    3. **दुःख निरोध**: दुख का अंत या मुक्ति **निर्वाण** है।
    4. **दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा**: **मध्य मार्ग** या **आर्य अष्टांगिक मार्ग** है।

बुद्ध का मध्य मार्ग या अष्टांगिक मार्ग

- बौद्ध धर्म कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास करता है। व्यक्ति के इस जन्म की स्थिति उसके पिछले कर्मों पर निर्भर करती है। कर्मों के बंधन या पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति ही निर्वाण है। इसे प्राप्त करने के लिए मध्य मार्ग का पालन करना आवश्यक है।

अष्टांगिक मार्ग

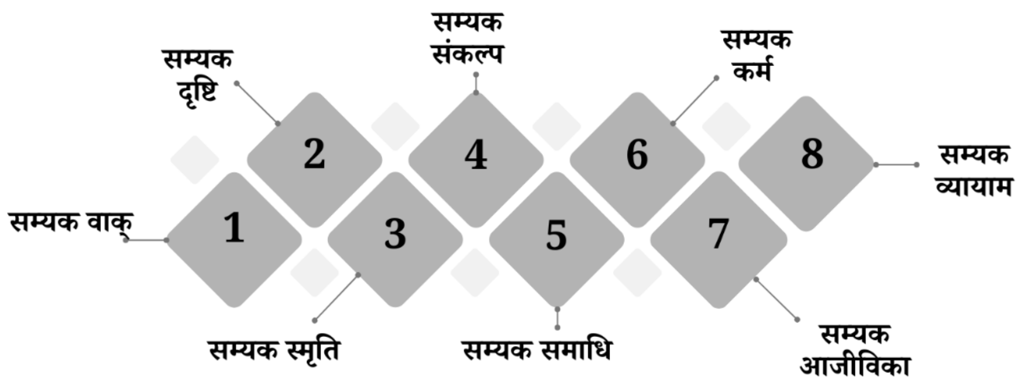

- बुद्ध ने सभी के प्रति अहिंसा और प्रेम का उपदेश दिया।

बौद्ध धर्म के तीन रत्न (त्रिरत्न) –

- बुद्ध: ज्ञान प्राप्त व्यक्ति।
- धम्म: बुद्ध की शिक्षाएँ (सिद्धांत)।
- संघ: भिक्षु समुदाय (मठवासी व्यवस्था)।

बौद्ध धर्म के संप्रदाय -

बौद्ध धर्म के संप्रदाय

हीनयान

- यह एक रूढ़िवादी बौद्ध संप्रदाय था।
- इनका मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं था।
- बोलचाल की मुख्य भाषा पाली थी।
- सम्राट अशोक ने हीनयान संप्रदाय को संरक्षण दिया था।

महायान

- मूर्ति पूजा में विश्वास (बुद्ध की मूर्ति)।
- इसे "बोधिसत्वयान" या "बोधिसत्व" भी कहा जाता है।
- संस्कृत भाषा का व्यापक प्रयोग किया गया।
- कनिष्क के काल में महायान बौद्ध शाखा का उद्भव हुआ ।

थेरवाद

- ये पाली को पवित्र भाषा मानते थे।
- इसे हीनयान संप्रदाय का उत्तराधिकारी सम्प्रदाय माना जाता है।

वज्रयान

- यह सम्प्रदाय तंत्र, मंत्र और यंत्रों में विश्वास करता है।
- यह हिंदू धर्म से प्रभावित था।
- यह महायान बौद्ध दर्शन पर आधारित है।

बौद्ध संगीति

समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष
1. 483 ई. पू.	राजगृह	आजातशत्रु	महा कश्यप
2. 383 ई. पू.	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
3. 250 ई. पू.	पाटलिपुत्र	अशोक	मोग्गालिपुत
4. 72 ई.	कश्मीर	कनिष्क	वसुमित्र

1. **प्रथम संगीति** – दो पुस्तकें (ग्रंथ) लिखी गईं:

I. **सूत्र पिटक:** भगवान बुद्ध का जीवन, उपदेश, शिक्षाएँ तथा बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है।
   - इसमें खुद्दक निकाय में बुद्ध के पूर्व जन्म की कहानियाँ (जातक) मिलती हैं।
   - इसकी रचना आनंद ने की थी।

II. **विनय पिटक:** संघ के नियम तथा बौद्ध भिक्षुओं के आचार विचार (आचार्य) का वर्णन **मिलता** है। इसकी रचना उपाली ने की थी।

2. **द्वितीय संगीति –** बौद्ध धर्म 2 भागों में विभक्त हो गया:
   - **स्थविर तथा महासांघिक – दो शाखाओं में विभाजन।**
3. **तृतीय संगीति –** इसमें तीसरे पिटक – अभिधम्म पिटक का वर्णन किया गया। इसमें **"बौद्ध धर्म के दर्शन"** का वर्णन हो गया जिसे मोग्गलिपुत्त तिस्स ने संकलित किया। इस तीसरे पिटक को ही त्रिपिटक कहा गया। अभिधम्म पिटक की रचना मोग्गलिपुत्त तिस्स ने की थी।
4. **चतुर्थ संगीति – बौद्ध धर्म पुनः** दो भागों में विभक्त हो गया: हीनयान (छोटा मार्ग) और महायान (बड़ा मार्ग) | हीनयान एवं महायान की कई शाखाओं में विभक्त हो गया।

बौद्ध साहित्य

- बौद्ध साहित्य "त्रिपिटक" में उल्लेखित है।

1. **विनय पिटक:** बौद्ध भिक्षुओं के पालन किए जाने वाले नियमों और विनियमों का संग्रह।
2. **सुत्त पिटक:** बुद्ध के संवाद और शिक्षाएँ, जो नैतिकता और पवित्रधर्म से संबंधित हैं। इसमें 5 भाग हैं:
   - खुद्दक निकाय
   - अंगुत्तर निकाय
   - दीघ निकाय
   - मज्झिम निकाय
   - संयुक्त निकाय
3. **अभिधम्म पिटक:** दर्शन, नैतिकता, ज्ञान के सिद्धांत और मनोविज्ञान पर चर्चा।
   - पाली: मिलिंद पान्हो द्वारा मिलिंद पन्हो (मिलिंडा और नागसेना के बीच संवाद)।
   - संस्कृत: अश्वघोष द्वारा बुद्धचरित्र।
   - जातक कथाएँ: बुद्ध के पिछले जन्मों के बारे में जानकारी, मानव और पशु दोनों रूपों में।

Toppers Notes Unleash the topper in you

जैन धर्म

- **जैन दर्शन** को सबसे पहले **तीर्थंकर ऋषभ देव** (पहले तीर्थंकर, जिन्हें आदिनाथ भी कहा जाता है) द्वारा प्रतिपादित किया गया था।
- **24वें और अंतिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर** ने जैन धर्म को मुख्य रूप से प्रोत्साहित किया।
- वर्धमान महावीर के अनुयायियों को **'जैन'** कहा जाता है।
  - "जैन" शब्द "जिन" से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है 'विजेता' (आत्मा का विजेता)।
  - **भद्रबाहु** द्वारा रचित **'कल्पसूत्र'** में 24 तीर्थंकरों का उल्लेख है।

प्रमुख तीर्थंकर –

1ST - ऋषभ देव

2ND - अजीतनाथ

22 वें - नेमिनाथ / अरिष्टनेमि

23 वें - पार्श्वनाथ

24 वें - वर्धमान महावीर

नोट: यजुर्वेद में तीन तीर्थंकरों ऋषभ देव, अजीतनाथ और अरिष्टनेमि का उल्लेख है।

वर्धमान महावीर

- जैन धर्म को धर्म के रूप में स्थापित करने का श्रेय वर्धमान महावीर को जाता है।
- **जन्म**: 540 ई. पू. (लगभग), कुंडग्राम (वैशाली, बिहार), एक गण-संघ के शासक परिवार में।
  - **बच्चपन का नाम :** वर्धमान
  - **पिता**: सिद्धार्थ (ज्ञातृक क्षत्रिय)
  - **माता**: त्रिशला (लिच्छवी राजकुमारी, प्रमुख चेतक की बहन)
  - **पत्नी**: यशोदा
  - **पुत्री**: अनोज्जा प्रियदर्शना, जिनका विवाह 'जामालि' (महावीर के पहले शिष्य) से हुआ।
- **गृहत्याग**: 30 वर्ष की आयु में घर छोड़कर 12 साल तक सच्चे ज्ञान की तलाश में भटकते रहे। तपस्या का अभ्यास किया और कपड़े त्याग दिए।
- **ज्ञान प्राप्ति**: 42 वर्ष की आयु में **जृम्भिक ग्राम** में ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान **(कैवल्य)** प्राप्त किया, जिससे उन्हें **'केवलिन'** कहा जाता है। इस ज्ञान के साथ उन्होंने दुख और सुख पर विजय प्राप्त की।
- **मृत्यु**: 468 ई. पू., पावापुरी (72 वर्ष) (बिहारशरीफ, बिहार)।
- **उपदेश**: पावा (पटना के पास) में अपना उपदेश दिया और अपना जीवन अंग, मिथिला, मगध और कोसल में अपने दर्शन का प्रचार करने में बिताया।

जैन दर्शन

- जैन धर्म का मानना है कि मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य आत्मा की शुद्धि और मोक्ष की प्राप्ति है, जिसका अर्थ है जन्म और मृत्यु से मुक्ति। यह त्रिरत्न और पंचव्रत के अनुसरण से प्राप्त किया जा सकता है।
- मोक्ष/मुक्ति तीन सिद्धांतों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जिसे 'त्रिरत्न' कहा जाता है:
  1. सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान)
  2. सम्यक दर्शन (सही विश्वास/आस्था)
  3. सम्यक चरित (सही आचरण)
- सम्यक आचरण का अर्थ है पाँच महान व्रतों (पंचमहाव्रत) का पालन करना |
  1. अहिंसा (हिंसा नहीं करना)
  2. सत्य (सच बोलना)
  3. अस्तेय (चोरी नहीं करना)
  4. ब्रह्मचर्य (संयमित जीवन जीना)
  5. अपरिग्रह (भौतिक वस्तुओं से अलग रहना)
- **पंचव्रत :** महाव्रत (भिक्षुओं के लिए) और अणुव्रत (गृहस्थों के लिए)
- जैन धर्म ने देवताओं के अस्तित्व को मान्यता दी लेकिन उन्हें जिन से निम्न स्थान दिया।
- **अनेकांतवाद/स्यादवाद:** जैन धर्म में अनेकांतवाद की एक मौलिक धारणा है, जो परम सत्य पर जोर देती है। इसके अनुसार, कोई भी इकाई एक बार में स्थायी होती है, लेकिन परिवर्तन से भी गुजरती है जो निरंतर और अपरिहार्य है।

जैन धर्म संगीति

जैन परिषद	स्थान	अध्यक्षता	विवरण
प्रथम जैन संगीति	पाटलिपुत्र (298 ई.पू.)	स्थूलभद्र (बिंदुसार द्वारा संरक्षित)	जैन धर्म की पवित्र शिक्षाओं को 12 अंगों में संकलित किया गया। (महावीर की पवित्र शिक्षाओं का वर्णन)
द्वितीय जैन संगीति	वल्लभी, गुजरात (512 ई.)	देवर्धि क्षमाश्रवण	12 उपांग (लघु खंड) जोड़े गए।

जैन धर्म की शाखाएँ

आधार	श्वेताम्बर	दिगम्बर
संस्थापक	स्थूलभद्र	भद्रबाहु
वेश-भूषा	सफेद वस्त्र	निर्वस्त्र
क्षेत्र	उत्तर भारत	दक्षिण भारत

4 CHAPTER दिल्ली सल्तनत काल

भारत पर अरब आक्रमण

712 ई. मे **मोहम्मद बिन कासिम** ने सिंध के राजा दाहिर सेन को हराया । दाहिर एवं उसका पुत्र जयसिंह लड़ते हुए मारे गए ; **यह भारत पर प्रथम मुस्लिम एवं प्रथम अरब आक्रमणकारी** था

- रावर के युद्ध में बौद्ध भिक्षुओं ने कासिम की मदद की।
- कासिम ने पहली बार सिन्ध में जजिया कर' लगाया
- इसकी जानकारी हमें 'चचनामा'" से मिलती है । (चच दाहिर का पिता था), सिन्ध के इतिहास की जानकारी इस पुस्तक से मिलती है ।

तुर्क आगमन (आक्रमण)

<u>महमुद गजनवी</u>

- प्रथम तुर्क आक्रमणकारी जिसने भारत पर आक्रमण किया।
- सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक था ।
- 'गाजी' की उपाधि धारण की ।
- 'बुत शिकन' (मूर्ति भंजक) की उपाधि धारण की ।
- जिहाद (धर्म युद्ध)/जेहाद का नारा दिया ।
- आक्रमण का वास्तविक उद्देश्य भारत की सम्पन्नता या लूट था ।

आक्रमण

- पहला आक्रमण काबुल - 1000 ई.
- मुल्तान पर आक्रमण - 1005 ई.
- नारायणपुर (अलवर) पर आक्रमण - 1009 ई.
- थानेश्वर (हरियाणा) 1014 ई.
- कश्मीर पर 1016 ई. - पहला असफल आक्रमण
- कन्नोज व मथुरा - 1018-19 ईरवी
- प्रभास पट्टन (सोमनाथ) पर आक्रमण 1026 ई. में भीम प्रथम (चालुक्य) शासक।
- 1027 में जाटों पर अन्तितम आक्रमण

मोहम्मद गौरी

- मूलतः यह गौर प्रान्त के थे इसलिए गौरी कहलाये|
- 1175 ई. में मुल्तान पर आक्रमण ।
- 1178 ई. में गुजरात पर आक्रमण ।
- मोहम्मद गौरी ग़ोरी वंश से था इसे शंसबानी वंश भी कहा जाता है।
- गुजरात पर मूल द्वितीय या भीम द्वितीय का शासन था । वास्तविक शक्तियाँ उसकी माता नायिका देवी के पास थी ।
- आबू की लड़ाई में गौरी की सेना बुरी तरह पराजित हुई।

1191 ई. में तराईन का प्रथम युद्ध

- गौरी बनाम पृथ्वीराज चौहान (विजय हुए)
- **1192 ई. में तराईन का द्वितीय युद्ध** गौँरी की विजयी हुई और इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान मारे गये ।
- गोविन्द राज इस समय दिल्ली का गवर्नर था

1194. में चन्दावर का युद्ध

- गौरी बनाम जयचन्द (कन्नोज) गौरी जीत गया ।
- मोहम्मद गौरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को विजित क्षेत्रों का गवर्नर नियुक्त किया एवं स्वयं गजनी (गौर) चला गया ।
- 1205 ई. - खोखरों के विरुद्ध अभियान किया जिसके कारण गौरी घायल हो गया तथा 1206 में उसकी मृत्यु ही गई ।
- गौरी के मौहम्मद बिन साम नाम के सिक्के चलाए जिन्हें देहलीवाल सिक्के कहा जाता है।
- सिक्को पर देवी लक्ष्मी का चित्र मिलता है।

सल्तनत काल

दिल्ली सल्तनत एक मध्यकालीन मुस्लिम राजवंश था जिसने 13वीं से 16वीं सदी तक भारत पर शासन किया। लगभग तीन सौ वर्षों की इस अवधि के दौरान पांच अलग-अलग राजवंशों ने दिल्ली पर शासन किया और उन्हें सामूहिक रूप से दिल्ली सल्तनत कहा जाता है।

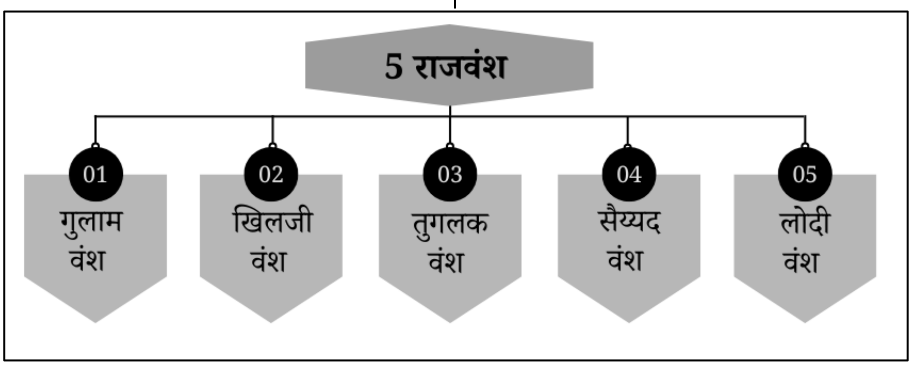

सबसे लंबा शासनकाल: तुगलक वंश (1320-1414 ई.) – 94 वर्ष **सबसे कम शासनकाल:** खिलजी वंश (1290-1320 ई.) – 30 वर्ष

गुलाम वंश (1206-1290 ई.)

- इसे मामलुक वंश के नाम से भी जाना जाता है।(तुर्की में मामलुक का मतलब गुलाम होता है)

1. कुतुबुद्दीन ऐबक (1203- 1210ई.)

- ऐबक मुहम्मद गौरी का गुलाम था, जिसे गौरी द्वारा भारतीय क्षेत्रों का गवर्नर नियुक्त किया गया।
- "ऐबक" का अर्थ 'चंद्रमा का स्वामी' है।
- मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद इसने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की और गुलाम वंश की स्थापना की।
- 1208 ई. में गौरी के भतीजे ग्यासुद्दीन महमूद ने सेवक को दास मुक्ति पात्र देकर उसे सुल्तान की उपाधि प्रदान की।
- ऐबक उत्तरी भारत का पहला स्वतंत्र मुस्लिम शासक और दिल्ली सल्तनत का संस्थापक था।
- उसने सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार के नाम पर **कुतुब मीनार** का निर्माण शुरू किया, जिसे बाद में इल्तुतमिश ने पूरा किया।
- निर्माण कार्य: **कुव्वत-उल-इस्लाम (दिल्ली) (कोरबेल तकनीक से निर्मित) और अढ़ाई दिन का झोंपड़ा (अजमेर)।**
- प्रसिद्ध विद्वानों को राजकीय संरक्षण दिया जैसे- हसन निजामी (ताज-उल-मासिर के लेखक) और फखरुद्दीन (तारीख-ए-मुबारक शाही के लेखक)।
- वर्ष 1210 में चौगान (घुड़सवार पोलो) खेलते समय इसकी अचानक मृत्यु हुई।

2. शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- इल्तुतमिश इल्बरी कबीले से था और उसने इल्बरी वंश की स्थापना की।
- ऐबक ने इसे गुलाम के रूप में खरीदा, बाद में दामाद बनाया और ग्वालियर का इक्तेदार नियुक्त किया।
- 1211 में यह आराम बख्श को पराजित कर सुल्तान बना और अपनी राजधानी लाहौर से दिल्ली स्थानांतरित की।
- ख्वारिज्म के शाह जलाल-उद-दीन मांगबरनी को शरण न देकर उसने चंगेज खान के हमले से भारत की सुरक्षा की।
- 1229 में उसने अब्बासी खलीफा से 'मंसूर' पत्र प्राप्त किया और भारत का पहला वैध शासक बना।
- इल्तुतमिश ने इक्ता, सेना और मुद्रा प्रणाली जैसी प्रशासनिक संस्थाओं को आकार दिया और तुर्क-ए-चहलगानी का गठन किया।
- 1236 में इल्तुतमिश ने स्वयं का मकबरा बनवाया तथा सुल्तान गढ़ी (भारत का पहला मकबरा) , तारकिन का दरवाजा (नागौर) का निर्माण करवाया |
- इल्तुतमिश ने चांदी के टंका व सोने के सिक्के (दिनार) जारी किए।
- **इल्तुतमिश** द्वारा **दिल्ली-इ-कुहना** के बाहर जो बड़ा जलाशय बनवाया गया था, उसे **हौज़-ए-सुल्तानी** कहा जाता है। यह जलाशय शहर की पानी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण था और दिल्ली सल्तनत काल में इसका बड़ा महत्व था।

3. रज़िया (1236-1240 ई.)

- इल्तुतमिश ने अपनी पुत्री रज़िया को उत्तराधिकारी बनाया, लेकिन दिल्ली के काज़ी और वज़ीर ने रुकनुद्दीन फिरोज को सुल्तान चुना।
- रज़िया ने तुर्क अमीरों के समर्थन से सिंहासन पर अधिकार कर लिया और सुल्तान बनीं, वह **दिल्ली की पहली और एकमात्र मुस्लिम शासिका थीं।**
- उसने परंपरागत महिला परिधान त्याग दिए और बिना पर्दा किये दरबार का संचालन किया, साथ ही मलिक जमालुद्दीन याकूत को **अमीर-ए-अखुर** नियुक्त किया।
- 1240 में अल्तुनिया द्वारा पराजित होकर वह कैद कर ली गईं और तुर्की अमीरों ने बहरामशाह को सिंहासन पर बैठाया।
- 1246 में बलबन ने नासिरुद्दीन महमूद को सुल्तान बनाया और इब्न बतूता और इसामी के अनुसार, बलबन ने उसे जहर देकर सिंहासन पर कब्जा किया।

4. उलुग खान / ग़यासुद्दीन बलबन (1266-1287 ई.)

- **ग़यासुद्दीन बलबन** की उपाधि **'ज़िल्ल-ए-इलाही'** , **लाल बख्स** थी और उसने सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद के नायब के रूप में सेवा की, अपनी पुत्री का विवाह सुल्तान से कराया।
- 1266 में नासिरुद्दीन की मृत्यु के बाद बलबन सुल्तान बना और उसने 'राजत्व का सिद्धांत' दिया, जिसमें सुल्तान को ईश्वर की छाया और दिव्य कृपा का प्राप्तकर्ता बताया।
- उसने सिजदा और पाबोस जैसी ईरानी रीति-रिवाज शुरू की और फारसी उत्सव **'नवरोज'** की शुरुआत की, साथ ही **"तुर्क-ए-चहलगानी"** को समाप्त किया।
- बलबन ने गुप्तचरों की नियुक्ति कर अमीरों की गतिविधियों पर निगरानी रखी और एक मजबूत सेना का गठन किया, जिससे मंगोलों को पीछे हटाया।
- उसने दीवान-ए-अर्ज सैन्य विभाग व दीवान ए बरीद नामक गुप्तचर विभाग की स्थापना की और रक्त और लोहा की नीति अपनाई, 1287 में उसकी मृत्यु के बाद उसके बेटे कैकुबाद को सुल्तान बनाया।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

- संस्थापक – जलालुद्दीन खिलजी।
- जलालुद्दीन खिलजी के दरबार में **प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो** और हसन दहलवी थे।

1. **जलालुद्दीन खिलजी (1290 - 1296 ई.)**
   - रणथम्भौर पर आक्रमण किया तथा जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर के बारे में कहा कि - "मेरे सैनिक के एक बाल की कीमत इस किले से कहीं ज्यादा है |
   - '**दीवान-ए-वकूफ**' की स्थापना (जो व्यय विभाग था)।
   - जलालुद्दीन के भतीजे अलाउद्दीन खिलजी ने इलाहाबाद में उनकी हत्या कर दी।
2. **अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)**
   - **जलालुद्दीन खिलजी** की हत्या कर **अलाउद्दीन** दिल्ली का सुल्तान बना।
   - उसकी उपाधि '**सिकंदर-ए-सानी**' (दक्कन अभियान के बाद) थी और अन्य नाम **सिकंदर II**, **युग विजेता**, **अमीर-उल-मोमिनीन** थे।
   - अलाउद्दीन ने विद्रोहों को रोकने के लिए कुछ नियम बनाए: अमीरों की संपत्तियाँ जब्त की, गुप्तचर प्रणाली का पुनर्गठन किया, और शराब व नशीले पदार्थों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया तथा सामाजिक समारोहों और उत्सवों को निषेध किया।
   - उसने **अलाई किला**, **अलाई दरवाजा**, **हौज खास**, और **सीरी** नामक नई राजधानी का निर्माण करवाया।
   - अलाउद्दीन का मकबरा दिल्ली में स्थित है।
   - 1316 में **मलिक काफूर** ने अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद सिंहासन पर कब्जा किया।
   - **सैन्य अभियान**: गाजी मलिक को मंगोल आक्रमणों से सुरक्षा के लिए नियुक्त किया गया। **गुजरात पर विजय** (1299) – नुसरत खान और उलूग खान द्वारा , **रणथंभौर पर विजय** (1301), **चित्तौड़ पर विजय (**1303), **मालवा पर विजय** (1305), सिवाना पर विजय(1308 ई.) और **जालौर पर विजय** (1311 ई.) में |
   - **दक्षिण भारत पर विजय** – नेतृत्त्व मलिक काफूर द्वारा: देवगिरी के यादव (1307), वारंगल के काकतीय (1309), द्वारसमुद्र के होयसल (1310), मदुरै के पांड्य (1311)।

> **नोट**: चित्तौड़ पर विजय के बाद, वहां की महिलाओं ने जौहर (आत्म-बलिदान) किया, जिसका उल्लेख मल्लिक मोहम्मद जायसी ने **पद्मावत** में किया है।

   - उसने '**दाग**' (घोड़ों की पहचान) और '**हुलिया**' (सैनिकों की पहचान) की शुरुआत की।
   - **कर व्यवस्था**: जजिया (गैर-मुसलमानों पर), खराज (भूमि राजस्व), घरी कर (घर कर), चरी कर (व्यक्तिगत कर), और ज़कात (अमीर मुसलमानों पर)।

तुगलक वंश (1320-1414 ई.)

संस्थापक - ग़यासुद्दीन तुगलक (ग़ाजी मलिक)

1. **ग़यासुद्दीन तुगलक (1320-24 ई**.)
   - तुगलक वंश का संस्थापक।
   - गयासुद्दीन तुगलक ने अमीरों के साथ मेल-मिलाप की नीति अपनाई।
   - इसने दिल्ली के निकट तुगलकाबाद शहर और छप्पनकोर्ट किला (तुगलकाबाद किला) का निर्माण कराया।
2. **मुहम्मद बिन तुगलक (1324-51 ई.)**
   - इसका वास्तविक नाम जौना खान था, और उन्होंने अपने पिता ग़यासुद्दीन तुगलक की हत्या कर 1325 में गद्दी पर कब्जा किया।
   - उन्होंने सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए सैन्य अभियान चलाए, और पेशावर से लाहौर तक के क्षेत्र पर प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित किया, लेकिन खुरासान और कराचिल अभियानों में सफल नही हो सके ।
   - मिस्र, चीन और ईरान के साथ राजनयिक संबंध बनाए।
   - समकालीन लेखक: इसामी, बरनी, और इब्न बतूता ने मुहम्मद बिन तुगलक के शासन का वर्णन किया।
   - **मुहम्मद बिन तुगलक**, दिल्ली के सुलतान, ने **इब्न बतूता** को **काजी (न्यायाधीश)** के रूप में नियुक्त किया था, क्योंकि इब्न बतूता अपनी विद्वत्ता और कला के प्रति उदार योगदान के लिए प्रसिद्ध थे। इब्न बतूता, एक प्रसिद्ध मोरक्कन यात्री, मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में दिल्ली आए थे और उनकी विद्वता के कारण उन्हें यह प्रतिष्ठित पद दिया गया।
   - **इब्न बतूता ने "रिहला" में उल्लेख किया कि मुहम्मद बिन तुगलक ने सती प्रथा को रोकने का प्रयास किया।**
   - जियाउद्दीन बरनी ने "तारीख-ए-फिरोज शाही" और "तारीख-ए-जहांदारी" की रचनाएँ की।
   - उसने दक्षिण भारत पर नियंत्रण के लिए राजधानी को दिल्ली से देवगिरी (दौलताबाद) स्थानांतरित किया, लेकिन असुविधा के कारण दिल्ली को पुनः राजधानी बनाया।
   - चांदी की कमी के कारण उसने कांस्य सिक्कों की शुरुआत की, जिससे आर्थिक अस्थिरता आई।
     - सांकेतिक मुद्रा का प्रयोग किया।
     - नेक सोने और चांदी के सिक्के जारी किए गए
   - दोआब क्षेत्र में भूमि कर बढ़ाया गया, जिससे किसान विद्रोह हुए और उसने कृषि सुधारों के लिए तकावी ऋण और दीवान-ए-अमीर-ए-कोही की स्थापना की।
   - विद्रोह: अवध, माबर, वारंगल, कम्पिली, सिंध और गुजरात के राज्यपालों ने विद्रोह किया।
   - हसन शाह के विद्रोह से मदुरै सल्तनत की स्थापना हुई, और विजयनगर (1336) और बहमनी (1347) साम्राज्य स्थापित हुए।

3. फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ई.)

- **वास्तविक नाम**: कमालुद्दीन फिरोज।
- इक्ता प्रणाली को पुनर्जीवित किया और इसे वंशानुगत बनाया।
- जज़िया कर लगाया गया – गैर-मुसलमानों पर एक कर, जिसे भू-राजस्व से अलग वसूल किया गया।
- अनाथों और विधवाओं के लिए दीवान-ए-खैरात नामक विभाग बनाया।
- जामा मस्जिद और कुतुब मीनार जैसे स्थापत्य का जीर्णोद्धार कराया।
- उसकी आत्मकथा '**फुतुहात-ए-फिरोजशाही**' में दर्ज है।
- फिरोज तुगलक के शासन में भारतीय शास्त्रीय कृति "रागदर्पण" का फारसी में अनुवाद किया गया।

4. नासिरुद्दीन मोहम्मद तुगलक

- नासिरुद्दीन मोहम्मद के शासन काल में तैमुर ने 1398 ई. में दिल्ली पर आक्रमण किया और नासिरुद्दीन मोहम्मद दिल्ली छोड़कर भाग गया|
- तैमूर ने ख़िज्र खान को मुल्तान का राज्यपाल नियुक्त किया, जिसने सैय्यद वंश की स्थापना की। ख़िज्र खान ने सुल्तान दौलत खान को हराकर दिल्ली पर कब्जा कर लिया और 1414 ई. में सैय्यद वंश की स्थापना की।

सैय्यद वंश

सैय्यद वंश का शासन दिल्ली सल्तनत पर केवल 37 वर्ष रहा|

1. ख़िज्र खां

- सैय्यद वंश का संस्थापक|
- इसने सुल्तान की उपाधि धारण न करके "रैयला ऐ आला" की उपाधि धारण की|

2. मुहम्मद शाह (1434-1445 ई.)

- इसने दरबारी षड्यंत्रों का सामना किया और अपने अमीरों पर नियंत्रण खो दिया।
- सत्ता बहलोल लोदी के हाथ में आ गयी

3. आलम शाह (1445-1451 ई.)

- यह सबसे कमजोर शासक हुआ।
- यह बहलोल लोदी को सिंहासन देकर बदायूँ चला गया।

लोदी वंश (1451-1526 ई.)

- यह पहला अफगान वंश था। बहलोल लोदी (1451-1489 ई.) ने कुछ सरदारों की सहायता से सेना की कमान संभाली और सुल्तान बन गया।
- लोदी सल्तनत काल का अंतिम वंश था और इसका नेतृत्व अफगानों ने किया था।

1. बहलोल लोदी (1451-1489 ई.)

- बहलोल लोदी ने 1451 ई. में आलमशाह को हटाकर दिल्ली पर लोदी वंश की स्थापना की|
- यह अमीरों को "मसनद - ए - आली" कहकर पुकारता था|
- इसने बहलोली सिक्के चलाए, जो मुग़ल काल तक चलते रहे|

2. सिकंदर लोदी (1489 - 1517 ई.)

- बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद सिकंदर लोदी गद्दी पर बैठा।
- उसने गैर-मुसलमानों पर जजिया कर पुनः लागू किया।
- धार्मिक रूप से कट्टर था, हिंदू मंदिरों को नष्ट किया और हिंदुओं पर कई प्रतिबंध लगाए।
- राजधानी को दिल्ली से आगरा स्थानांतरित किया (1506 ई.) और आगरा शहर की स्थापना की।
- गज़-ए-सिकंदरी नामक भूमि मापन इकाई (32 अंकों का) शुरू की।
- निर्माण कार्य: मोठ की मस्जिद।
- कविता: गुलरुखी (फ़ारसी में कविताएं रचित)।
- भारतीय संगीत पर पहला फ़ारसी ग्रंथ: "लज्जत-ए-सिकंदरशाही"।

3. इब्राहीम लोदी (1517-1526 ई.)

- दिल्ली सल्तनत का अंतिम शासक।
- राणा सांगा ने इब्राहिम लोदी को खातोली के युद्ध (1517 ई.) में हराया|
- यह पहले पानीपत का युद्ध (1526) में बाबर से पराजित हुआ।
    - पंजाब के गवर्नर दौलत खान लोदी ने बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया।
- यह युद्ध भूमि में मारा जाने वाला एकमात्र सुल्तान शासक था।

5
CHAPTER

मुगल काल

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना 21 अप्रैल, 1526 को पानीपत के प्रथम युद्ध के बाद बाबर ने की। बाबर का जन्म उज्बेकिस्तान के अंदीजान (फरगाना घाटी) में हुआ था।

1. बाबर (1526-30 ई.)

- मूल नाम: जहीर-उद-दीन-मुहम्मद।
- बाबर ने पानीपत के युद्ध में (21 अप्रैल 1526) इब्राहिम लोदी को पराजित किया।
    - बाबर ने इस युद्ध तुगलमा पद्धति का प्रयोग किया।
- इसने मुगल वंश की स्थापना की,जिसने भारत में ब्रिटिश शासनकाल की शुरुआत तक शासन किया।
- यह पिता की तरफ से तैमूर का वंशज और माता की तरफ से चंगेज खान का वंशज था।
- 1519 से 1524 के बीच उसने भेरा, सियालकोट और लाहौर पर आक्रमण किया।

बाबर के युद्ध

- 1527: खानवा के युद्ध में मेवाड़ के राणा सांगा को हराया और युद्ध के बाद गाजी की उपाधि धारण की
- 1528: चंदेरी में मेदिनी राय को पराजित किया व मालवा पर आधिपत्य स्थापित किया ।
- 1529: बिहार में घाघरा के युद्ध में अफगानों को हराया (पानी और जमीन दोनों ही स्तर पर युद्ध हुआ)।
    - (बाबर और महमूद लोदी + शेरशाह सूरी + नुसरत शाह के मध्य)।
- वर्ष 1530 में आगरा में इसकी मृत्यु हुई।
- मकबरा: काबुल में।
- इसने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा) तुर्की में लिखी।

2. हुमायूं (1530- 1556 ई.)

- हुमायूं 1530 में आगरा में मुग़ल शासक बना, और सिंहासन पर बैठने से पहले वह बदख्शां का सूबेदार था।
- इसके उत्तराधिकार को उसके भाई कामरान, हिंदाल, और अस्करी ने अफगानों के साथ मिलकर चुनौती दी।
- उसकी बहन गुलबदन बेगम ने उसकी जीवनी 'हुमायूंनामा' लिखी।
- हुमायूं ने दिल्ली में दीन पनाह नामक अपनी दूसरी राजधानी बनाई।
- 1539 में, चौसा के युद्ध में शेर शाह सूरी ने हुमायूं को पराजित किया और 1540 में बिलग्राम के युद्ध में पुनः पराजित कर शेर शाह सूरी ने सूर वंश की स्थापना की।
- हुमायूं ने 1555 में मच्छीवाड़ा और सरहिंद के युद्ध में विजय प्राप्त कर पुनः मुग़ल सत्ता स्थापित की।
- 1556 में दीन पनाह पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने से उसकी मृत्यु हो गई।
- इनकी जीवन को स्टेनली लेनपूल ने "लड़खड़ाता जीवन" की संज्ञा दी।
- हुमायूं का मकबरा दिल्ली में स्थित है।

सूर वंश (1540-1555)

शेर शाह सूरी (1540-1545 ई.)

- शेर शाह सूरी का असली नाम फिरोज़ ख़ान था, और वह सासाराम (बिहार) के जागीरदार हसन खान के पुत्र थे।
- 1539 में चौसा के युद्ध में हुमायूं को पराजित कर उसने शेर शाह की उपाधि ली।
- 1540 के कानपुर/बिलग्राम के युद्ध में हुमायूं को फिर से हराया और कानपुर को अपने साम्राज्य में शामिल किया।
- विजय अभियानों में मालवा (1542), रणथंभौर (1542), रायसेन (1543), मारवाड़ (1542), चित्तौड़ (1544) और कालिंजर (1545) पर कब्जा किया।
- 1545 में कालिंजर विजय के दौरान शेर शाह की मृत्यु हो गई।
- शेरशाह सूरी का मकबरा सासाराम में स्थित है |
- उसने ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण करवाया, जो कलकत्ता से पेशावर तक जाता था।
- उसने नए चांदी के सिक्के "दाम" और त्रि-धातु मुद्रा प्रणाली की शुरुआत की, जिसमें सोने, चांदी और तांबे के सिक्के शामिल थे।

3. अकबर (1556- 1605 ई.)

- अकबर की उपाधि जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी थी।
- 13 वर्ष की उम्र में उसका राज्याभिषेक पंजाब के कालानौर में हुआ, और उसके संरक्षक बैरम खान थे।
- द्वितीय पानीपत युद्ध (1556) मुहम्मद आदिल शाह के हिंदू सेनापति हेमू और अकबर के संरक्षक बैरम खान के बीच लड़ा गया, जिसमें हेमू पराजित हुआ।
- 1561 में अकबर की सेना ने सारंगपुर की लड़ाई में बाज बहादुर को पराजित किया और उसकी रानी रूपमति का अपहरण कर लिया।
- अकबर ने मालवा पर कब्जा करने के बाद 1562 में एक और सेना भेजी और मालवा को मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया।

- अकबर का विवाह आमेर के कछवाहा राजपूत शासक भारमल की पुत्री हरखा बाई से हुआ।
- राणा प्रताप सिंह और उनके पुत्र अमर सिंह ने अकबर की सर्वोच्चता को नहीं माना, और हल्दीघाटी का युद्ध (1576) राणा प्रताप और अकबर की सेना के बीच लड़ा गया।
- अकबर ने 1581 में दीन-ए-इलाही नामक नया धर्म स्थापित किया और तीर्थयात्रा कर व जजिया कर को समाप्त किया।
- अकबर ने सूफ़ी संत सलीम चिश्ती के सम्मान में फतेहपुर सीकरी का निर्माण करवाया।
- उसने आगरा किला, लाहौर किला, इलाहाबाद किला और बुलंद दरवाजा का निर्माण किया।
- अकबर ने हुमायूँ का मकबरा दिल्ली में बनवाया, जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।
- अकबर के नवरत्नों में बीरबल (प्रशासक), अबुल फजल (विद्वान और प्रशासक), और फैजी (विद्वान और प्रशासक), टोडरमल (वित्त मंत्री), भगवानदास (मनसबदार), मान सिंह (मनसबदार), तानसेन (संगीतकार), अब्दुर्रहीम खानखाना (प्रशासक, हिंदी कवि), और मुल्ला दो प्याजा (प्रशासक) अकबर के नवरत्न थे।
- अकबर के शासनकाल में भू-राजस्व प्रणाली को जब्ती या बंदोबस्त प्रणाली कहा जाता था।
- टोडरमल ने इस प्रणाली में सुधार कर दहसाला प्रणाली को लागू किया, जिसमें किसानों को अपनी भूमि के 1/3 उपज के रूप में भू-राजस्व देना पड़ता था।
- भूमि राजस्व का निर्धारण दहसाला पद्धति (10 साल के अनुमान) के आधार पर होता था।
- अकबर ने प्रशासन हेतु मनसबदारी प्रणाली की शुरुआत की, जिसमें मनसब सबसे ऊंचा पद होता था और यह पद वंशानुगत नहीं होते थे।
- **अकबर** ने **सुलह-ए-कुल** या **विश्व शांति** का विचार प्रस्तुत किया। यह सिद्धांत एक ऐसे नैतिक प्रणाली पर आधारित था जो सभी लोगों के लिए सार्वभौमिक रूप से लागू होती थी, और इसका उद्देश्य विभिन्न धर्मों के बीच शांति, सहिष्णुता और सामंजस्य को बढ़ावा देना था। अकबर अपने शासनकाल में धार्मिक सहिष्णुता और विभिन्न समुदायों के बीच सौहार्द बढ़ाने के लिए प्रसिद्ध थे।

4. जहांगीर(1605- 1627 ई.)

- जहांगीर का मूल नाम नूर-उद-दीन मुहम्मद सलीम (प्रिंस सलीम) था।
- उसने आगरा में शाही न्याय की चाह रखने वालों के लिए जंजीर-ए-अदल (न्याय की जंजीर) की स्थापना की।
- 1611 में उसने मिहर-उन-निसा से विवाह किया, जो बाद में नूरजहां के नाम से जानी गईं और पादशाह बेगम बनीं।
- 1615 ई. में सर टॉमस रो भारत आया और 1616 ई. में जहांगीर से अजमेर में मिला तथा जहांगीर ने इसे व्यापारिक रियायते दी |
- उसने 5वें सिख गुरु अर्जुन देव की हत्या की।
- राजकुमार खुर्रम और महावत खान ने उसके खिलाफ विद्रोह किया।
- उसकी आत्मकथा तुजुक-ए-जहांगीरी (फारसी में) में लिखी गई, और उसकी समाधि लाहौर में रावि नदी के तट पर स्थित है।

5. शाहजहाँ (1627-1658 ई.)

- औरंगजेब की माता जगत गोसाईं/जोधा बाई थी, जो राजा जगत सिंह की पुत्री थीं।
- शाहजहाँ ने **"अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब किरण ए सानी"** की उपाधि धारण कर सिंहासन पर बैठा |
- वह अपनी दक्कन नीति और विदेश नीति के लिए प्रसिद्ध था।
- 1632 में उसने पुर्तगालियों को हराया और 1637 में अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा को साम्राज्य में मिलाया।
- उसने कला, संस्कृति और वास्तुकला को प्रोत्साहित किया तथा शाहजहाँ के शासन काल को **स्थापत्यकला का स्वर्ण** काल माना जाता है |
- निर्माण कार्यों में आगरा का ताजमहल (स्थापत्य कलाकार - उस्ताद अहमद लाहोरी) , जामा मस्जिद, दीवान-ए-आम (आगरा), दीवान-ए-खास (दिल्ली), और मयूर सिंहासन शामिल थे।

6. औरंगजेब (1658 - 1707 ई.)

- औरंगजेब की उपाधि आलमगीर थी।
- उसने गुरु तेग बहादुर (सिखों के 9वें गुरु) को मृत्युदंड दिया क्योंकि उन्होंने इस्लाम अपनाने से इनकार किया था।
- औरंगजेब ने शासन के पहले 23 वर्षों (1658-81) में उत्तर भारत पर ध्यान केंद्रित किया।
- 1686 में उसने बीजापुर को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- 1687 में उसने गोलकुंडा पर कब्जा किया।
- उसने मुहतसिब नामक धार्मिक अधिकारी नियुक्त किया।
- औरंगजेब ने मुस्लिम कानून/इस्लामी धर्म पर "फतवा-ए-आलमगीरी" लिखा।
- उसने जजिया कर पुनः लागू किया।
- औरंगजेब का मकबरा खुल्दाबाद (दौलताबाद) में स्थित है।
- उसे जिंदा पीर (जीवित संत) के नाम से भी जाना जाता था।
- 1665 में औरंगजेब ने आमेर के जय सिंह (राजपूत) के साथ षड्यंत्र रचा और शिवाजी को दरबार में कैद कर लिया, लेकिन शिवाजी 1674 में भाग निकले।
- शिवाजी ने स्वयं को छत्रपति घोषित किया और उसका उत्तराधिकारी संभाजी था, जिसे औरंगजेब ने 1689 में मृत्युदंड दिया।

उत्तरवर्ती मुग़ल

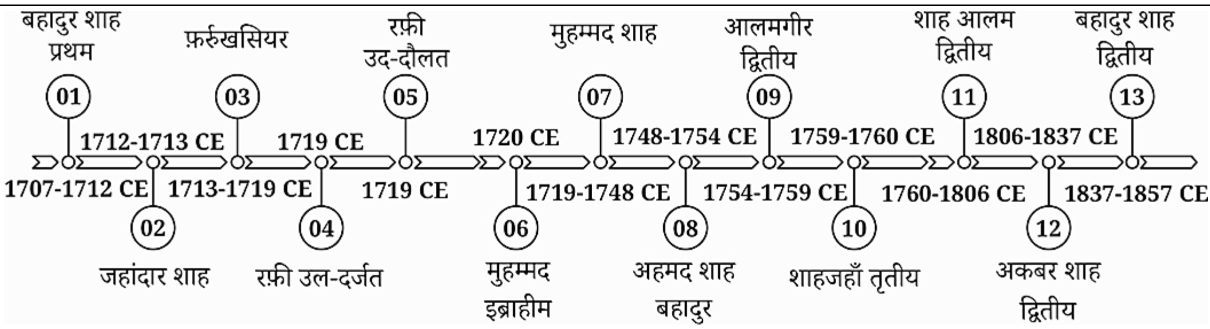

बहादुर शाह प्रथम (1707-1712):
- यह मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब के बाद गद्दी पर बैठे थे।
- उनके शासन में सुलह-ए-कुल की नीति को बढ़ावा दिया गया, लेकिन उनका शासन कमजोर था।

जहांदर शाह (1712-1713):
- बहादुर शाह के बाद वे सम्राट बने, लेकिन उनका शासन बहुत छोटा और अस्थिर था।
- वे अपने परिवारिक संघर्षों में उलझे रहे और उनका शासन बहुत ही अस्थिर था।

फ़्रूख़ सियार (1713-1719):
- वह एक कमजोर शासक थे और उनके शासन के दौरान मुग़ल साम्राज्य में बहुत सारी राजनीतिक अस्थिरता और संकट आए।
- उनका शासन भी बहुत छोटा था और 1719 में उनका अंत हुआ।

रफ़ी उल-दारज़त (1719):
- उनका शासन बहुत ही अल्पकालिक था। वे केवल कुछ महीने ही सम्राट बने।

मुहम्मद शाह (1719-1748):
- उनका शासन मुग़ल साम्राज्य के पतन के समय का था। उनके शासन के दौरान साम्राज्य का प्रभाव बहुत कम हो गया।
- 1739 में नादिर शाह के हमले के दौरान दिल्ली में बहुत अधिक तबाही हुई थी।

नोट : नादिर शाह, जो ईरान के शासक थे, ने **1739** ई. में दिल्ली पर आक्रमण किया और शहर को लूटा। इस घटना में नादिर शाह ने दिल्ली की बहुत सी संपत्ति लूट ली, जिसमें प्रसिद्ध **मोर का सिंहासन** (Peacock Throne) भी शामिल था। इसके अलावा, इस आक्रमण के दौरान दिल्ली में भारी तबाही मची और बहुत से लोग मारे गए।

अहमद शाह बहादुर (1748-1754):
- उनका शासन बहुत कमजोर था और इसके दौरान साम्राज्य में कई आंतरिक संघर्ष हुए।

आलमगीर II (1759-1760):
- आलमगीर II के समय मुगल साम्राज्य की स्थिति और भी कमजोर हो गई थी।

शाह आलम द्वितीय (1760-1837):
- शाह आलम द्वितीय का शासनकाल भी बहुत चुनौतीपूर्ण था, और ब्रिटिशों का प्रभाव बढ़ने लगा था।

बहादुर शाह द्वितीय (1837-1857):
- यह अंतिम मुगल सम्राट थे, जिनके शासनकाल के दौरान **1857 के विद्रोह** (सिपाही विद्रोह) का घटनाक्रम हुआ। इसके बाद मुगल साम्राज्य समाप्त हो गया।

मुगल काल के प्रमुख शहर	
नगर/सूबा	**महत्व**
अजमेर	चौहाण राजाओं की राजधानी, मुग़ल साम्राज्य का **सूबा मुख्यालय**, **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती** की दरगाह
दिल्ली	मुग़ल साम्राज्य की **राजधानी**, **लाल किला**, **जामा मस्जिद**, **कुतुब मीनार** जैसी ऐतिहासिक धरोहरें
आगरा	मुग़ल साम्राज्य का एक प्रमुख नगर, **ताज महल**, **आगरा किला** आदि, पहले **अकबर** और फिर **शाहजहाँ** की राजधानी
लाहौर	प्रमुख सांस्कृतिक और व्यापारिक केंद्र, **लाहौर किला**, **शाही मस्जिद** जैसी ऐतिहासिक संरचनाएं
फतेहपुर सीकरी	**अकबर** द्वारा स्थापित नई राजधानी, मुघल वास्तुकला का बेहतरीन उदाहरण, **बुलंद दरवाजा**
सूरत	प्रमुख व्यापारिक बंदरगाह, **पर्शिया**, **अरब**, और **यूरोप** के साथ व्यापार, मुग़ल काल का समृद्ध व्यापारिक केंद्र
कश्मीर	मुग़ल सम्राटों के शिकार और समर विश्राम स्थल, **आलमगीर** और **नदीम शाह** द्वारा सुसज्जित
बंगाल	समृद्ध व्यापारिक सूबा, **कलकत्ता**, **हुगली** जैसे प्रमुख नगर, मुग़ल साम्राज्य में व्यापार का महत्वपूर्ण केंद्र
मलवा	मध्यभारत में स्थित, मुग़ल साम्राज्य का महत्वपूर्ण सूबा, **उज्जैन**, **इंदौर** और **भोपाल** जैसे नगर
बीकानेर और जोधपुर	राजस्थान के महत्वपूर्ण नगर, मुग़ल साम्राज्य के साथ सहयोग, **बीकानेर किला** और **जोधपुर किला**